पाठ 22

औरंगजेब तथा मुगल साम्राज्य का पतन

आइए सीखें

- औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का विस्तार कहाँ-कहाँ तक था?
- औरंगजेब के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं की जानकारी।
- मुगल साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

औरंगजेब इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था। उसने हिन्दू जनता पर जजिया तथा तीर्थयात्रा कर लगाये। चित्रकला तथा संगीत को गैर इस्लामी मानते हुए, उसने उन पर प्रतिबंध लगा दिया। उसकी कठोर धार्मिक नीति और अविश्वासी स्वभाव के फलस्वरूप सशक्त विद्रोह उठ खडे हुए। जिन्हें दबाने के प्रयासों में साम्राज्य का प्रशासन कमजोर हो गया तथा आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।

औरंगजेब के शासनकाल की प्रमुख घटनाएँ

बुन्देलो, जाटों तथा सतनामियों के विद्रोह- बुन्देलखण्ड में चम्पतराय ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। पराजित होने पर उसने मुगल सत्ता को स्वीकार करने की अपेक्षा आत्महत्या करना बेहतर समझा। उसके उत्तराधिकारी छत्रसाल ने भी औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह किया और धमौनी तथा कालिंजर पर अधिकार स्थापित कर लिया। अन्त तक औरंगजेब उसका दमन न कर सका।

आगरा और मथुरा के आस-पास निवास करने वाले जाटों ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह किया। उनको औरंगजेब से शिकायत थी कि लगान अधिक है, जिसे चुकाने में वे असमर्थ है। जाटों का विद्रोह औरंगजेब के शासनकाल के अन्त समय तक चलता रहा।

सतनामियों का मुख्य केन्द्र नारनौल और मेवाड़ था। ये स्वयं को सत्य के नाम के उपासक मानते थे। ये लोग पुजारी जैसी वेशभूषा पहनते थे। औरंगजेब के धार्मिक अत्याचारों के कारण इन्होंने विद्रोह किया। औरंगजेब ने इनके विद्रोह को कठोरता से दबा दिया।

सिक्खों से संघर्ष- औरंगजेब इस्लाम का कट्टर अनुयायी था। जबरदस्ती धर्म परिवर्तन की उसकी नीति के विरोध में हिन्दुओं के धर्म की रक्षा के लिए सिक्खों के नौवें गुरू तेगबहादुर आगे आए। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म में विश्वास रखने के लिए स्वतंत्र है। वे संकीर्ण

शिक्षण संकेत

- भारत के मानचित्र में औरंगजेब के राज्य की सीमा को समझाएँ।
- पानीपत के तृतीय युद्ध के विषय में छात्रों को विस्तारपूर्वक जानकारी दें।

मानचित्र क्र.-5: मुगल साम्राज्य का विस्तार

सम्प्रदायवाद के विरोधी थे। गुरू तेग बहादुर ने औरंगजेब की नीति का घोर विरोध किया। फलस्वरूप औरंगजेब ने उनको कैद कर लिया तथा सन् 1675 ई. में दिल्ली के चाँदनी चौक में उनका शीश काट दिया गया। इस प्रकार गुरु तेग बहादुर ने आदर्शों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। जिस स्थान पर उनका शीश काटा गया था, उस स्थान पर सिक्खों का प्रसिद्ध गुरूद्वारा शीशगंज स्थित है। इसके पश्चात गुरु तेगबहादुर के पुत्र गुरु गोविन्दसिंह ने 'खालसा पंथ' की स्थापना की।

इनके नेतृत्व में सिक्ख, मुगलों से निरंतर संघर्ष करते रहे। गोविन्दसिंह ने मुगलों के खिलाफ सिक्खों को सैनिक शक्ति बल के रूप में संगठित किया। गुरु गोविन्दसिंह को अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। औरंगजेब ने गुरु गोविन्दसिंह के दो पुत्रों को जिन्दा दीवार में चुनवा दिया, फिर भी सिक्खों का संघर्ष जारी रहा।

मराठों से संघर्ष- दक्षिण में मराठे मुगल साम्राज्य को चुनौती दे रहे थे। मराठा शक्ति का नेतृत्व शिवाजी कर रहे थे। औरंगजेब ने मराठों की शक्ति को कुचलने का प्रयास किया, परन्तु वह अन्तिम समय तक इस कार्य में सफल न हो सका।

सन् 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। औरंगजेब के उत्तराधिकारी न तो साम्राज्य का कार्यभार सम्हाल सके और न विभिन्न प्रदेशों में होने वाले विद्रोहों का दमन कर सके। फलस्वरूप मुगल साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया।

नादिरशाह का आक्रमण- 1739 ई. में ईरान के शासक नादिरशाह ने मुगल साम्राज्य की दुर्बलता को देखकर आक्रमण किया। उसने दिल्ली में लूट व कत्लेआम का आदेश दिया। शाहजहाँ का बनवाया हुआ मयूर सिंहासन वह अपने साथ ले गया।

अठारहवीं शताब्दी में बादशाहों, मनसबदारों व अमीरों के बल पर चलने वाला शक्तिशाली मुगल साम्राज्य दुर्बल होता चला गया एवं भारत में एक बार पुनः छोटे-छोटे राज्य अस्तित्व में आ गए।

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

1. **साम्राज्य की विशालता-** मुगल साम्राज्य के अत्यधिक विशाल हो जाने के कारण सम्पूर्ण साम्राज्य पर नियन्त्रण रखना कठिन था, अयोग्य उत्तराधिकारी साम्राज्य की रक्षा न कर सके।

2. **उत्तराधिकार के नियम का अभाव-**प्रत्येक शासक की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्रों में राज्य प्राप्ति के लिए संघर्ष होता रहा, जिससे साम्राज्य कमजोर होता गया।

3. **औरंगजेब का अविश्वासी स्वभाव एवं कट्टर धार्मिक नीति-** औरंगजेब अपने पुत्रों पर भी विश्वास नहीं करता था। वह अपने पुत्रों को राजनैतिक एवं सैनिक शिक्षा प्रदान नहीं कर सका, जिससे वे अयोग्य रह गए। औरंगजेब की अनुदार व असहिष्णुतापूर्ण धार्मिक नीति के कारण सिक्खों, जाटों, सतनामियों, राजपूतों, मराठों आदि के द्वारा अपने धर्म की रक्षा के लिए किए गए संघर्षों को कुचलने के प्रयास में निरंतर युद्ध चलते रहे, इसके परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का पतन हुआ।

4. **औरंगजेब की दक्षिण भारत नीति-** औरंगजेब ने अपने जीवन के अन्तिम पच्चीस वर्ष भारत के दक्षिण भागों में युद्धों में व्यतीत किए, परिणामस्वरूप उत्तर भारत में प्रशासन पर मुगलों की पकड़ ढीली पड़ने लगी। युद्धों के कारण राजकोष खाली हो गया।

5. **विलासी शासक एवं सरदार-** मुगल शासकों की विलासिता और स्थापत्य प्रेम के कारण साम्राज्य की आर्थिक स्थिति लड़खड़ाने लगी। भवन निर्माण तथा राजसी ठाट-बाट में अत्यधिक धन व्यय किया गया। मुगल सरदारों की विलासिता, चारित्रिक दुर्बलता, सम्राट के प्रति निष्ठा में कमी तथा गुटबाजी, मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

6. **विदेशी आक्रमण**

(अ) नादिरशाह का आक्रमण - ईरान के शासक नादिरशाह ने मुगल साम्राज्य की दुर्बलता को देखकर सन् 1739 में आक्रमण कर दिया। उसने दिल्ली में कत्लेआम करवाया तथा शाहजहाँ का प्रसिद्ध सिंहासन तख्ते ताऊस, कोहिनूर हीरा तथा 70 करोड़ की सम्पदा ईरान ले गया।

(ब) अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण - अहमदशाह अब्दाली नादिरशाह का महत्वपूर्ण सेनापति था। सन् 1747 ई. में नादिरशाह की हत्या के बाद वह शासक बना। इधर भारत में मराठे अपनी शक्ति संचय कर अपना प्रभाव उत्तर भारत तक बढ़ा रहे थे। दिल्ली और पंजाब से अफगानों को बाहर निकालने की मराठों की कोशिश के फलस्वरूप 14 जनवरी, 1761 ई. के दिन मराठों और अहमदशाह अब्दाली के बीच पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ, इसमें मराठे पराजित हुए। मराठों को कुछ समय के लिये उत्तर भारत से हटना पड़ा। इन दोनों आक्रमणों से मुगल साम्राज्य दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र तक सीमित रह गया।

7. **अंग्रेजों का कब्जा -** मुगल साम्राज्य को गिराने में अंग्रेजों ने भी भाग लिया। अंग्रेज व्यापारी धीरे-धीरे एक राजनीतिक सत्ता बन गये। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के उस सारे हिस्से पर कब्जा कर लिया, जो पहले कभी मुगल साम्राज्य का अंग था।

8. **नौ सेना की कमी -** नौ सेना की ओर ध्यान न देना मुगलों के लिये घातक सिद्ध हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोप की शक्तिशाली नौ सेना के आगे मुगल ठहर न सके।

9. **यूरोपीय शक्तियाँ-** यूरोप में भारतीय वस्तुओं विशेषकर वस्त्र और मसालों की बहुत माँग थी। इसलिये यूरोपीय देशों (पुर्तगाल, हॉलैण्ड, फ्रांस और इंग्लैण्ड) के व्यापारियों ने भारत से व्यापार करने के प्रयास तेज कर दिये। उन्होंने व्यापारिक कंपनियाँ स्थापित कीं। भारत में अपने सामान के सुरक्षित रखने के लिये उन्होंने गोदाम बना लिया और सेना भी रखने लगे। इन कंपनियों में आपस में प्रतिद्वंदिता शुरु हो गई। मुगल साम्राज्य के दुर्बल होते ही स्वतंत्र राज्यों में संघर्ष होने लगे, जिसका लाभ विदेशी व्यापारियों ने उठाया। वे अपनी नौ सेना तथा शक्ति के बल पर भारत की राजनीति में दखल देने लगे।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(1) जाटों का निवास मुख्य रूप से किन नगरों के आसपास था?

(अ) दिल्ली और आगरा (ब) आगरा और मथुरा

(स) मथुरा और भरतपुर (द) आगरा और झाँसी

(2) पानीपत का तृतीय युद्ध किस वर्ष में हुआ था?

(अ) सन् 1526 (ब) सन् 1556

(स) सन् 1560 (द) सन् 1761

(3) यूरोपीय देशों में भारत की किन वस्तुओं की विशेष माँग थी?

(अ) वस्त्र और मसाले (ब) वस्त्र और चाँदी

(स) मसाले और रत्न (द) मसाले और घोड़े

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह करने वाले बुन्देले नेता ..... तथा .....थे।

(2) गुरुद्वारा शीशगंज ..... के बलिदान स्थान पर स्थित है।

(3) नादिरशाह का आक्रमण सन् ..... में हुआ था।

(4) औरंगजेब की ..... के फलस्वरूप मुगल प्रशासन ढीला पड़ गया।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) औरंगजेब ने हिन्दुओं पर कौन से कर लगाये थे?

(2) सतनामियों के विषय में आप क्या जानते हैं?

(3) औरंगजेब की किस नीति के कारण उसके उत्तराधिकारी अयोग्य रह गए?

(4) नादिरशाह तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के क्या परिणाम हुए?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए।

परियोजना कार्य–

- भारत के रेखा मानचित्र में मुगल साम्राज्य के विस्तार को दर्शाते हुए बुंदेलों, जाटों व सतनामियों का क्षेत्र अंकित कीजिए।